# विसंबंध/अलगाव (Alienation)

इसे विसंबंधन, इतरीकरण, पृथक्करण, परकीयकरण स्व–विमुखता (Self-Alienation) आदि नामों से जाना जाता है। समाजशास्त्र में अलगाव का सिद्धांत का संबंध मुख्य रूप से मार्क्स से है। इसका सर्वप्रथम वर्णन अपनी पुस्तक "आर्थिक एवं दार्शनिक पाण्डुलिपि" (Economic and Philosophic Manuscripts of 1844) में किया तथा एक अवधारणा के रूप में अपनी पुस्तक दास कैपिटल, 1967 के प्रथम वोल्यूम में स्थापित किया। मार्क्स पर हीगल (मुख्य रूप से) एवं फाउरबैक का प्रभाव देखा जा सकता है।

हीगल ने दार्शनिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया तथा हीलग से पहले रूसो ने "द थ्योरी ऑफ सोशल कॉन्ट्रेक्ट" में व्यक्ति पर सामाजिक इच्छाएं थोपने के सदंर्भ में अलगाव की अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग किया।

मार्क्स के अनुसार औद्योगिक यूग में उत्पादन श्रम शक्ति की अपेक्षा जड़ शक्ति के प्रयोग से होने के कारण श्रम का यंत्रीकरण में वृद्धि हुई है। मार्क्स इसके पीछे सामाजिक संरचना को उत्तरदायी मानते है इसमें मजदूर की रचनात्मकता समाप्त हो जाती है। इससे श्रम का अप–मानवीकरण हुआ है। एरिक फ्रॉम के अनुसार अलगाव की स्थिति में व्यक्ति अपने आप को निम्नस्तरीय वस्तु समझता है, उसका कर्ताभाव समाप्त हो जाता है।

## विसंबंधन की संकल्पना

मार्क्स की अनुसार "अलगाव व्यक्ति की वह दशा है जिसमें उसका कार्य पराई शक्ति बन जाती है।" यह आत्मिक या प्राकृतिक घटना नहीं बल्कि निश्चित ऐतिहासिक अवस्था में मानवीय शोषण के कारण उत्पन्न दुःख, गरीबी, अन्याय एवं अज्ञान का फल है। यह आधुनिक पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था की देन है।

ऐरिक फ्राम ने अपनी पुस्तक 'The Sane Society' में कहा है कि "अलगाव अनुभव का वह स्वरूप है जिसमें व्यक्ति अपने आपको परदेशी/अजनबी समझने लगता है। व्यक्ति प्रकृति से परे होकर अपने आपको को नग्न एवं लज्जित पाता है।" एरिक फ्राम ने अलगाव को मशीनीकरण का परिणाम माना है।

उत्पादन के पूंजीवादी तरीके ने काफी विस्तृत पैमाने पर मानव श्रम की उत्पादकता को बढ़ा दिया है लेकिन ऐसा उत्पादकों को उत्पीड़ित करके किया गया है। जीवन चुस्त, सृजनात्मक और उत्पादनकारी है लेकिन कामगारों की गतिविधि उसके संबंधित न होकर पूंजीपति से जुड़ी होती है

प्राचीन उत्पादन प्रक्रिया में श्रमिक सबसे महत्वपूर्ण इकाई था। जब व्यक्ति उत्पादन प्रक्रिया में अपना योगदान देता है, तब उसका लगाव बना रहता है, उसमें उसकी सृजनशीलता लगी है जिसे मार्क्स "श्रम का वस्तुकरण" कहते है, लेकिन कारखाना व्यवस्था में उत्पादित वस्तु पर उसका नियंत्रण नहीं रहता, ना ही मुनाफा बढता है। उसकी सृजनशीलता समाप्त हो जाती है, उसका स्थान यंत्र ले लेते है, जिससे "श्रम का अवस्तुकरण" (Deobjectification) होता है।

## मार्क्स ने निम्न प्रकार के अलगाव बताएं

1. उत्पादित वस्तुओं से विमुखन – ऐसा उत्पाद जो उसकी मेहनत की अभिव्यक्ति है, वह उसका नहीं है। वस्तु पर उसका कोई नियंत्रण नहीं रहता। इस कारण कामगार को अपने कार्य से आत्मसंतुष्ठि नहीं मिल पाती और न ही श्रम का पूरा पैसा मिलता। श्रमिक की रचनात्मकता समाप्त हो जाती है।
2. उत्पादन प्रक्रिया एवं कार्य से अलगाव – कामगार ऐसी वस्तु बन गया है जिसे खरीदा या बेचा जा सकता है और इसका निर्धारण पूंजीपति करता है। उत्पादन की निर्णय प्रक्रिया में उसकी कोई भूमिका नहीं रहती। श्रमिक के लिए उत्पादन अर्थहीन है।

3. अपने आप/स्वयं से अलगाव – आत्म–अलगाव में व्यक्ति मनौवैज्ञानिक संतुष्ठि वाले कार्यो से विमुख हो जाता है। वह अपने आप से बेखबर होकर यंत्रवत काम करता है।

4. अन्य कामगारों/सहसंबंधियों/मालिक से अलगाव – जब व्यक्ति अपने जीवन के प्रति उदासीन होता है तो सामाजिक जीवन से भी दूर हो जाता है। कामगार की मेहनत पन्य वस्तु/कमोडिटी में बदल जाती है। इस पण्यीकरण ने आपसी सामाजिक संबंधों को समाप्त कर दिया।

मार्क्स के अनुसार पहली अवस्था में उत्पादन वस्तुओं से जो लगाव था, वो समाप्त होता है, दूसरी अवस्था में स्वयं से अलगाव हो जाता है। अंत में 'एक कामगार का अलगाव, सभी कामगारों का अलगाव बन जाता है।' धीरे–धीरे इसमें तीव्रता आती है और अंत में संगठित होते है और शक्ति के बल पर पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने की क्षमता विकसित करते है। इसे मार्क्स अ–अलगाव (**De-Alienation**) कहते है।

# अलगाव का व्यक्तिगत एवं मनौवैज्ञानिक पक्ष

- 1950–60 में मार्क्स ने अमेरिका में अलगाव संबंधी अध्ययनों में मनौवैज्ञानिक पक्षों पर ध्यान केन्द्रित किया। वर्ग अध्ययन – फ्रांस

- मैल्विन सीमेन ने अपने लेख "अलगाव के अर्थ के बारे में, 1959" में इसके मनौवैज्ञानिक आयामों को मापने का प्रयास भी किया है तथा अलगाव के पांच आयाम/कोटियां शक्तिहीनता, अर्थहीनता, एकाकीपन/सामाजिक पृथक्कता, नियमहीनता तथा आत्म–अलगाव बताए है।

- नवमार्क्सवादी विचारक अल्थूजर अलगाव के लिए व्यक्तिगत सम्पति, वर्ग प्रभूत्व, शोषण एवं श्रम विभाजन को उत्तरदायी मानते है।
- एडम स्चाफ ने अलगाव को सामाजिक घटना मानते हुए दो प्रकार 1. वस्तुगत या सामान्य अलगाव तथा 2. व्यक्तिगत या आत्म अलगाव।
- रिचर्ड सचाट ने 1970 में अपनी पुस्तक **Alienation** में इसके चार प्रकार बताए है –

1. व्यक्ति का प्रकृति से अलगाव
2. व्यक्ति का अपने घनिष्ठ मित्रों से अलगाव
3. व्यक्ति का अपने काम से मानसिक अलगाव
4. व्यक्ति का स्वयं से अलगाव

- फ्रांसीस अब्राहम के अनुसार मार्क्स की अलगाव की अवधारणा पुनरावर्ती विचार (Recurrent Theme) है।
- सी राइट मिल्स ने आधुनिक व्यावसायिकों एवं नौकरशाही पर अलगाव के सिद्धांत को लागू किया है।
- मैक्स वेबर ने भी कहा कि नौकरशाही में सृजनशीलता समाप्त होने पर अलगाव पनपेगा।
- मारक्यूज के अनुसार औद्योगिक समाज में व्यक्तिगत विकास की संभावनाओं को क्रूरता से कुचल दिया गया है।

---

- मेलविन कोहन ने अलगाव की अवधारणा का परीक्षण श्रमिक द्वारा उत्पादित वस्तु पर अपने नियंत्रण व कार्य की प्रक्रिया दोनों पर किया है।
- ब्लाउनर ने इंग्लैण्ड के अपने अध्ययन में कहा कि कम मशीनीकरण–कम अलगाव तथा अधिक मशीनीकरण–अधिक अलगाव उत्पन्न करता है। मशीनकरण एवं विसंबंधन में यू कर्व संबंध बताया।

- मैक्स वेबर ने भी कहा कि नौकरशाही में सृजनशीलता समाप्त होने पर अलगाव पनपेगा।
- मारक्यूज के अनुसार औद्योगिक समाज में व्यक्तिगत विकास की संभावनाओं को क्रूरता से कुचल दिया गया है।

- मेलविन कोहन ने अलगाव की अवधारणा का परीक्षण श्रमिक द्वारा उत्पादित वस्तु पर अपने नियंत्रण व कार्य की प्रक्रिया दोनों पर किया है।
- ब्लाउनर ने इंग्लैण्ड के अपने अध्ययन में कहा कि कम मशीनीकरण–कम अलगाव तथा अधिक मशीनीकरण–अधिक अलगाव उत्पन्न करता है। मशीनकरण एवं विसंबंधन में यू कर्व संबंध बताया।

## अलगाव के परिणाम

1. कामगार का अमानवीकरण (De-Hunanization) – विसंबंधन का अन्य पहलू श्रम का अपमानवीकरण करना है। पूंजीवाद से पूर्व श्रम विभाजन में व्यक्ति व्यक्ति महत्वपूर्ण था लेकिन पूंजीवाद में औद्योगिक कामगार गौण श्रमिक बन गए जो मशीनों के एक भाग मात्र है। औद्योगिक उत्पादन प्रक्रिया में सबकुछ यांत्रिक है। उत्पादित वस्तु के साथ कोई मानवीय संबंध नहीं होता है।
2. सामाजिक विघटन – इस स्थिति को दूर्खीम एवं मर्टन की एनोमी/प्रतिमानहीनता से जोड़ा जाता है। इसमें श्रमिक सामाजिक व्यवस्था तथा नियमों की अनदेखी करना प्रारम्भ कर देता है।

3. वस्तुनिष्ठ जीवनशैली – भावना एवं अनुभूति रहित।ए.पी. ऑर्गतसोव के अनुसार वस्तुनिष्ठ परिवर्तन के कारण कामगार के समस्त क्रियाकलाप गौण हो जाते है और उत्पादन की प्रक्रिया उस पर हावी हो जाती है।

4. व्यक्तिगत विघटन – अपने आप को सबसे तोड़ लेता है। पलायनवादी भी हो सकता है।

- मार्क्स ने किन चार प्रकार के अलगाव की चर्चा की है ?
- मार्क्स ने अलगाव के कई अलगाव की चर्चा की है, निम्न में से किस एक की चर्चा नहीं की ?